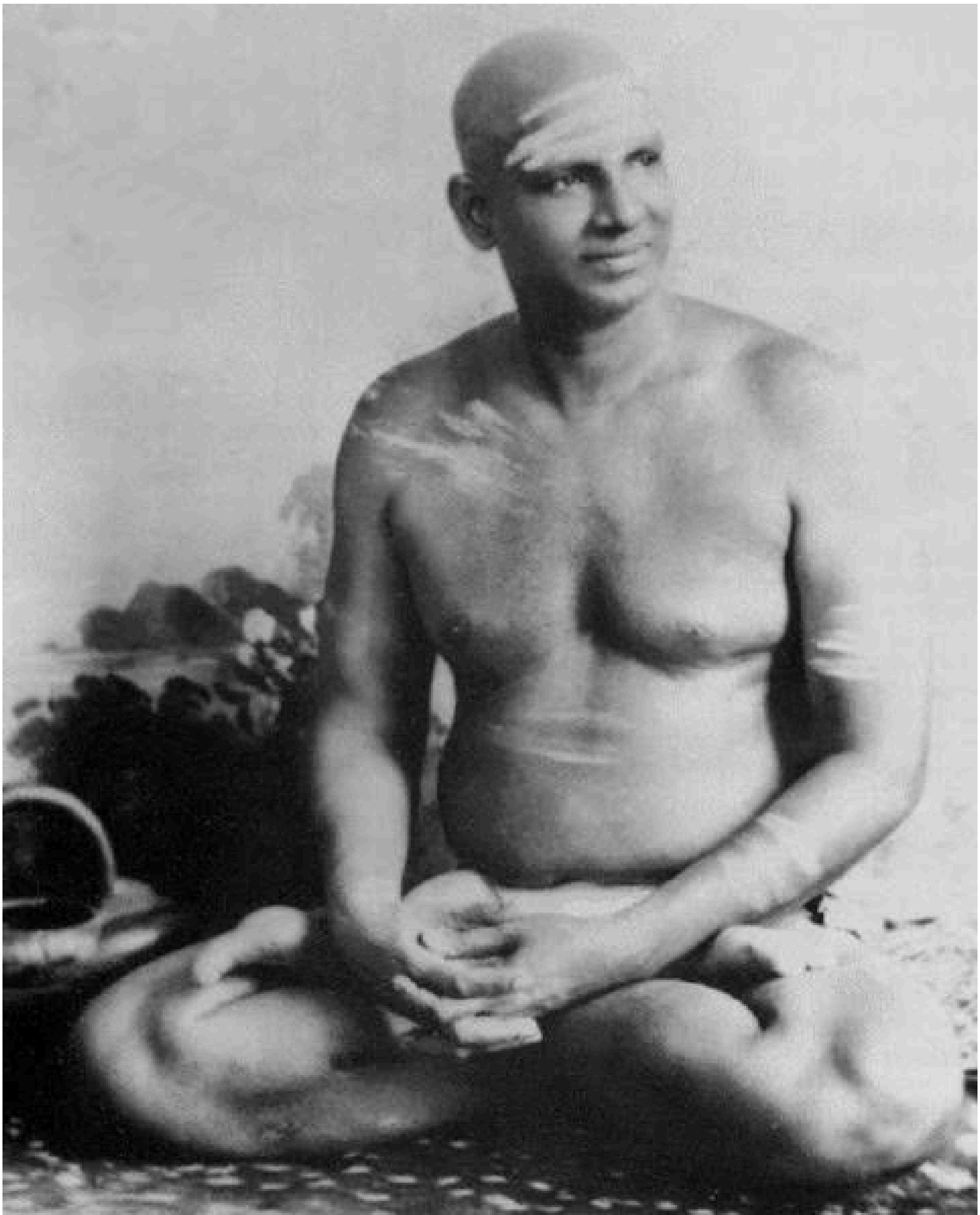



मूर्तिपूजा का दर्शन
और महत्त्व
स्वामी शिवानन्द

मूर्तपूजा का दर्नि और महत्त्व

"ThePhilosophyandSignificanceofIdolWorship'

काहहन्दीअनुवाद

लेखक

श्री स्वामी शर्वानन्द सरस्वती

अनुवाहदका

शर्वानन्दराधिकाअर्ोक

प्रकार्क

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : शर्वानन्दनगर - २४९ १९२

जजला : हटहरी-गढ़वाल, उत्तराखंि(हहमालय), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dishq.org

प्रथमहहन्दीसंस्करण२००५

द्ववतीय हहन्दी संस्करण -२००७
तृतीय हहन्दी संस्ंकरण- २०१५
(१,००० प्रर्तया)ाँ

HS9

PRICE : ₹30/-

'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शर्वानन्दनगर' के शलए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशर्त तथा उन्हींके द्वारा 'योग-वेदान्त
फारेस्ट एकिोमी प्रेस, पो. शर्वानन्दनगर, जज. हटहरी गढ़वाल,
उत्तराखंि, वपन २४९ -१९२ में मुहित ।
For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

प्रकार्कीय वक्तव्य

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शर्वानन्दजीमहाराज नेमूर्तपूिजा के दर्नि और महत्त्व से आध्याजममक जजज्ञासुओं को अवगत कराने के महान् ्प्रयोजन से “The Philosophy and Significance of Idol Worship' नामक इस ग्रन्थ की अगाँरेजी भाषा में रचना की थी। इस पुस्तक में इसके मूल ववषय 'मूर्तपूिजा का दर्नि और महत्त्व' के साथ ही 'मजन्दर', 'प्रसाद की महहमा', 'हहन्दू ्प्रतीकों का दर्नि', 'शर्वशलंगं' तथा 'आस्था और मूर्तपूिजा' जैसे ेआध्याजममक ववषयों के सारतत्त्व को भी पाठकों को हृदयंगम कराया गया है।

हम इसे ेअपना सौभाग्य समझते ेहैंकक हम अध्यामम-पथ के सिाकों के शलए अमयन्त महत्त्वपूण िइस पुस्तक के सरल, भावपूण िऔर हृदयग्राही हहन्दी अनुवाद को प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें पूण िआर् है कक इस पुस्तक के स्वाध्याय से असंख्य पाठकों के जीवन में एक नये सुन्दर और भव्य अध्याय का र्ुभारम्भ होगा।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

ववषय सूची

मूर्तिपूजा

भगवान् ्या परमाममा के पास पहुँचनेके शलएउपासक द्वारा ककये जाने वाले प्रयास का एक भाग मूर्तिपूजा है। उपासना का अथ िहै—भगवान् ्के पास बैठैना। र्ास्त्रों तथा गुरु द्वारा बताये अनुसार उपासना हेतु चुनी हुई मूर्त िया ववषय-वस्तु के पास बैठ कर उसका ध्यान कर उसमें मन को तैलिारावत् ्लीन कर देना उपासना कहलाता है। इसमें वे सभी र्ारीररक एवं मानशसक अनुभव व सािना सजम्मशलत हैंजजनके द्वारा जजज्ञासु आध्याजममकता के क्षेत्र में जस्थर प्रगर्त करता है और अपने भीतर, अपने हृदय में देवमव की उपजस्थर्त का अनुभव करता है।

उपासकना के लाभ

उपासना भक्त को भगवान् ्के पास बैठने ेऔर उनके साथ सम्पकि करने में सहायता करती है। यह हृदय को र्ुद्‌ किरती है और मन को जस्थर करती है। यह मन को र्ुद्‌ भाव या र्ुद्‌ प्रेम से भर देती है। यह मनुष्य को िीरे-िीरे देवता में रूपान्तररत कर देती है। उपासना मन-तत्त्व को बदलती है, रज और तमस् ्को नष्ट कर मन को सत्त्व या पववत्रता से भर देती है। यह वासनाओं, तृषूणाओं, अहंकार, कामुकता, घृणृा, क्रोि आहद को नष्ट कर देती है। यह मन को अन्तमुखिी करके अन्तमुखि वृवृत्त को प्रेररत करती है और साथ-ही-साथ भक्त को ईश्वर के सम्मुख लाती है। भक्त को जन्म और मृमृयु के चक्र से मुजक्त हदला कर उसे ेअमरमव और मुजक्त प्रदान करती है।

मन जजसका भ्रमर की भार्ाँत ध्यान करता है, वही बन जाता है। जैसा आप सोचते हैं, वैसा ही बन जाते ेहैं। यह एक अपररवतिनीय वैज्ञार्नक र्नयम है। उपासना में एक रहस्यमय और अधचन्मय र्जक्त है जो ध्यान करने वाले और ध्येय को एक कर देती है।

आप गीता के ११ वें अध्याय के ५४ वें श्लोक में देखेंगे, भगवान् ्अजुनि से कहतेहै -"हे परंतप ! म ैंमूल रूप में इस प्रकार हदखायी देता, जाना जाता और प्रववष्ट होता हूँ।"

पतंजशल महवष िने राजयोग सूत्रों में कई स्थानों पर उपासना के महत्त्व पर बल हदया है। यहाँतक कक राजयोगी के शलए भी उपासना आवश्यक है। उसका स्वयंके एक इष्टदेवता योगेश्वर कृष्ण या भगवान् ्शर्व होते े हैं। राज र्नयम या कक्रयायोग का एक अंगं भगवान् ्के प्रर्त आमम-समपणि है। महवष िपतंजशल कहते ेहैं— " उपासना के द्वारा व्यजक्त समाधि में प्रवेर् कर सकता है।"

वेसभी चीजें जो आध्याजममक उमथान और िम िकी प्राजतत में संवाहक हैं, उपासना उनमें से एक है। यह सभी लोगों के शलए लाभदायक तथा अपररहाय िपररणाम भी प्रदान करती है। यह सरल भी है।

खाना, पीना, सोना, भय और मैथुन आहद परुओं और मनुष्यों — दोनों में समान हैं; लेकेकन जो मनुष्य को सच्चा मानव या देवता बनाती है, वह है उपासना। जो मनुष्य मात्र ववषयी जीवन व्यतीत करता है, वह परु ही है, चाहे उसनेमनुष्य का रूप िारण कर रखा है।

सगुण उपासना और र्नगुणि उपासना

उपासना दो प्रकार की होती है-प्रतीक उपासना और अहंग्रह उपासना । 'प्रतीक' अथाति धचह्न, प्रतीक उपासना सगुण उपासना है। अहंग्रह उपासना र्नगुणि उपासना या र्नराकार, र्नगुणि अक्षर या परब्रह्म का ध्यान करना । मूर्तयों, र्ालग्राम, भगवान राम, भगवान कृष्ण, भगवान र्शव, गायत्री देवी के धचत्र का ध्यान प्रतीक उपासना है। ववस्तृत नीला अंबंर, सवव्यापक ईश्वर, सूय िका सवव्यापी प्रकार् आहद ये सब भी र्नराकार ध्यान के प्रतीक हैं। सद्गुणी उपासना साकार पर ध्यान है। र्नगुणि उपासना र्नराकार का ध्यान है।

भगवान् ्की लीलाओं का श्रवण, उनके नामों का गायन, भगवान् ्का र्नरन्तर स्मरण, उनके चरणों की सेवा, पुष्प अपणि, साष्टांग प्रणाम करना, प्राथनि, मन्त्र जप, आमम-समपणि, भक्तों की सेवो, देर् और मानव मात्र की नारायण भाव सेसेवा आहद सगुण उपासना का र्नमाणि करती है।

ॐ का आमम-भाव सेउच्चारण करना, आमम-भाव से देर् और मानवता की सेवा, आमम या ब्रह्म भाव से ॐ का मानशसक जप, 'नेर्त नेर्त' के शसद्िांत के द्वारा शमथ्या सिानों को **सोSर्ि** या **शशवोSर्ि** या महा वाक्य जैसे े 'अहं ब्रह्माजस्म' या 'तमवमशस' पर ध्यान करना। -ये अहंग्रह उपासना या र्नगुणि उपासना के अंतगति आते ेहैं।

सगुण उपासना भजक्तयोग है। र्नगुणि उपासना ज्ञानयोग है। सगुण या र्नगुणि ब्रह्म उपासक एक ही लक्ष्य पर पहुाँचते हैं; लेकेकन बाद वाला माग िअमयन्त कहठन है, क्योंकक इसमें जजज्ञासु को अपनी आध्याजममक सािना के प्रारम्भ से ही र्रीर के प्रर्त आसजक्त (देहाशभमान) को मयागना पड़ता है। अक्षर या अववनार्ी उनके शलए अमयन्त कहठन है जो अपनेर्रीर में आसक्त रहते ेहैं। और मन को र्नराकार र्नगुणि ब्रह्म पर केजन्ित करना अमयन्त कहठन है। अक्षर या र्नगुणि ब्रह्म का ध्यान करने के शलए अमयन्त एकाग्र और सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता होती है।

भजक्तयोग में ववशभन्न भाव

भजक्तयोग ज्ञानयोग सेअधिक सरल है। भजक्तयोग में भक्त ईश्वर के साथ अमयन्त मिुर और र्नकट सम्बन्ि स्थावपत कर लेता है। वह छहों भावों में से ककसी एक का अपनेस्वभाव, रुधच और क्षमता के अनुसार ववकास करता है।

भक्तों के भगवान् ्के प्रर्त छह भाव होते ेहैं; ये हैं— र्ान्त भाव, दास्य भाव, सख्य भाव, वामसल्य भाव, कान्त भाव और मिुय िभाव। ये भाव प्रकार और भावनाओं की प्रबलता में शभन्न-शभन्न होते ेहैं । ध्रुव और प्रह्लाद का भगवान् ्के प्रर्त माता-वपता का भाव था। यह र्ान्त भाव कहलाता है। दास्य भाव में भक्त एक दास की भार्ाँत व्यवहार करता है। भगवान् ्उसके स्वामी होते ेहैं। हनुमान् ्जी भगवान् ्के आदर् िसेवक थे। सख्य भाव में एकमव का भाव होता है। अजुनि में यह भाव था । वामसल्य भाव में भक्त ईश्वर को अपने बच्चे ेकी तरह देखता है। यर्ोदा का श्रीकृष्ण के प्रर्त और कौर्ल्या का श्री राम के प्रर्त यही भाव था। कान्त भाव में वही भाव जो पमनी का अपने पर्त के प्रर्त होता है। सीता और रुजक्मणी का भाव कान्त भाव था। मिुय िभाव में प्रेम की चरम सीमा होती है। इसमें प्रेमी और वप्रय प्रेम की प्रबलता से एक हो जाते ेहैं। रािा और मीरा का प्रेम ऐसा था। यह भाव भजक्त का शर्खर है। यह भगवान् ्के साथ एक होना या उनमें लीन हो जाना है। भक्त भगवान् ्में अमयधिक श्रद्िा रखता और र्नरन्तर प्रभु का ही स्मरण करता है। वह उनके नाम का कीतनि करता है, उनकी महहमा का गान करता है। उनके नाम तथा मन्त्र का जप करता है। वह प्राथनिा करता है, प्रणाम करता है। वह भगवान् ्की लीलाएँसुनता है। वह लगन से तथा पूणरूिपेण आमम-समपणि करता है। वह भगवान् ्से सम्पकि कर एक हो जाता है और जाता है। प्रभु में लीन हो जाता है।

मिुय िभाव में भक्त और भगवान् ्के मध्य अन्तरंग सम्बन्ि होता है। मिुय िया कान्त भाव में कामुकता बबलकुल भी नहीं होती। इसमें कामुकता की झलक भी नहींहोती। कामुक लोग इन दोनों भावों को समझ नहींसकते;े क्योंकक उनके मन वासना और र्नम्न ववषयी भूख से भरे हुए हैं। सूफी सन्तों में भी प्रेमी और वप्रय का भाव, मिुय िभाव होता है। जयदेव द्वारा शलखा गया ग्रन्थ गीत गोववन्द' ग्रन्थ मिुय िभाव से पूण िहै। योगी जजस प्रेम की भाषा का प्रयोग करते ेहैं, वह सांसाररक लोगों द्वारा नहींसमझी जा सकती। मात्र गोवपयाँ, रािा, मीरा, तुकाराम, नारद, हाकफ़ज़ ही इस भाषा को समझ सकते हैं।

पूजाऔरइष्टदेवता

परम्परागत उपासना हेतु एक सामान्य र्ब्द है पूजा और इसके अन्य समानाथी र्ब्द हैं अचनिा, वन्दना, भजन आहद । हालांकंक इनमें सेकुछ इसके ककसी-ककसी रूप पर जोर देते ेहैं। पूजा का ववषय इष्टदेवता होता है। इष्टदेवता का अथ िहै— पूजक देवता के जजस ववर्ेष रूप की पूजा करता है जैसे ेववष्णु ुभगवान् ्की पूजा वैष्णव लोग श्री राम या श्री कृष्ण के रूप में करते ेहैं, र्ैव लोग शर्व के आठ रूपों की पूजा करते ेहैं और र्ाक्त देवी के शभन्न-शभन्न रूपों की पूजा करते ेहैं।

भक्त कभी-कभी अपनी पूजा के शलए अपनेकुलदेवता या कुलदेवी का भी चुनाव कर लेतेहैं। कभी-कभी देवता का चुनाव उसके गुरु करतेहैं। कभी-कभी उसे ेस्वयं जो देवी या देवता अच्छे लगते हैं, वह उनका चुनाव कर लेता है। इस प्रकार इष्टदेवता बन जाते ेहैं।

बाह्य पूजा हेतु एक प्रतीक का प्रयोग ककया जाता है जैसै ेवैष्णव लोग र्ालग्राम का और र्ैव लोग शर्वशलंगं का प्रयोग करते ेहैं, भगवान् ्का धचत्र भी इस हेतुप्रयोग ककया जाता है।

हालांकक सभी चीजें पूजा की ही वस्तु हैं; लेककन इसका चुनाव व्यजक्त के स्वयं के ऊपर र्नभरि करता है। जो व्यजक्त के मन पर सवाधिक प्रभाव ािलता है, वही अधिक उपयुक्त होता है।

प्रर्तमा या प्रतीक सेपूजक के मन में ईश्वर का ववचार जागता है। र्ालग्राम से मन र्ीघ्र एकाग्र हो जाता है। हर व्यजक्त का प्रतीक, मूर्त िया धचत्र के प्रर्त स्नेह होता है। मूर्त ि(ववग्रह), सूय,ि अजग्न, जल, गंगा, र्ालग्राम, शर्वशलंगं आहद सभी प्रतीक ईश्वर के प्रतीक हैं और ये जजज्ञासुओंको मन की एकाग्रता और हृदय की र्ुद्िता प्रातत करने में सहायक होतेहैं। ये पूजक की स्वयं की रुधच द्वारा ग्रहण ककये जाते ेहैं और उसकी आस्था उस ववर्ेष देवता में ववद्यमान रहती है। मनोवैज्ञार्नक रूप से इस सबका अथ ियह है कक प्रतीकों या मूर्तयों के ववर्ेष सािनों के द्वारा एक ववर्ेष मनचाही गयी हदर्ा में श्रेष्ठ ढंग से काय िकर सके।

बृहत् ्मनुष्य जार्त में अधिकांर् अपववत्र या र्नबलि मन वाले ेहैं। इस शलए पूजा की ववषय-वस्तु अवश्य ही पववत्र होनी चाहहए। ऐसी ववषय-वस्तु जो वासना या मन को उत्तेजजत करे, उससेबचना चाहहए; लेकेकन एक उच्च सािक जो कक पववत्र मन वाला है और सवत्रि हर वस्तु में दैवी उपजस्थर्त का अनुभव करता है, ककसी भी प्रकार की वस्तु की पूजा कर सकता है।

पूजा में धचत्र या मूर्त िजो दैवी रूप का बोि कराती हो, पूजा की वस्तु होती है। मूर्त िकी पूजा की जाती है। धचत्र, शर्ला या ववग्रह या मूर्त िउस ववर्ेष देवता के रूप का प्रर्तर्नधिमव करती हैं। जजसकी इसके सामनेप्राथनिा की जाती है। शर्वशलंगं शर्व को दर्ाता है। यह सवश्रेष्ठि र्नराकार ब्रह्म को दर्ाता है। श्रुर्त कहती है : **"एकमेवाद्ववतीय िंब्रह्म"**- ब्रह्म एक ही है, यहााँकोई द्वैता नहींहै। शलंगं आखाँों को आकषकि और हदव्य लगता है। यह धचत्त को एकाग्र करने में सहायता करता है। रावण ने शर्वजी की आरािना की और शर्वशलंगं की पूजा द्वारा वरदान प्रातत ककये।

र्ालग्राम भगवान ववष्णु ुकी मूर्त िहै। यह उनका प्रतीक है. भक्त की ववर्ेष रुधच के अनुसार श्री राम, श्री कृष्ण, कार्तकेिय, गणेर्, हनुमान, भगवान दत्तात्रेय, श्री सीता, पावतिी, दुगाुमाता, काली माता, सरस्वती माता आहद की मूर्तयिा ाँहैं।

ववष्णु भगवान् ्और उनके अवतारों की मूर्तयिा ाँतथा र्जक्त और शर्व की मूर्तयिााँ प्रचशलत मूर्तयिा ाँहैं। वे मजन्दरों और घरों— दोनों में पूजी जाती हैं। र्तरुपर्त, पण्ढरपुर, पलानी, कथीरगामा आहद मजन्दर में जस्थत मूर्तयिा ाँर्जक्तर्ाली देवता हैं। वे प्रमयक्ष देवता हैं। वे अपने भक्तों को वरदान देते,े उनके रोगों को दूरू करते ेऔर दर्नि देते ेहैं। इन देवताओं के साथ आश्चयजिनक लीलाए ाँजुड़ी हुई हैं। हहन्दुमुव में कोई बहुदेववाद नहीं ंहै। शर्व, ववष्णु, ब्रह्मा और र्जक्त एक ही ईश्वर के ववशभन्न रूप हैं।

भगवान् ्अपनेभक्तों के सामने ववशभन्न प्रकार से प्रकट होते ेहैं। भक्त जजस रूप का चयन अपनी पूजा के शलए करता है, भगवान् ्वही रूप िारण कर लेते हैं। यहद आप भगवान् ्हरर के चतुभुजि रूप की पूजा करते ेहैं, तो

वे आपके सामनेउसी रूप में आयगें। यहद आप उनकी उपासना शर्वजी के रूप में करते ेहैं, तो वे आपको शर्वजी के रूप में दर्नि देंगे। यहद आप उनकी पूजा मा ाँदुगुा िया काली के रूप में करेंगे, े तो वे आपके पास दुगुािया काली के रूप में आयगें। यहद आप उन्हें भगवान् ्राम, भगवान् ्कृष्ण या दत्तात्रेय के रूप में पूजेंगे, तो वे आपके पास राम, कृष्ण या दत्तात्रेय के रूप में आयगें। यहद आप उनकी पूजा ईसामसीह या अल्लाह के रूप में करेंगे, े तो वे आपके पास ईसामसीह या अल्लाह के रूप में आयगें।

आप भगवान् ्शर्व या भगवान् ्हरर, भगवान् ्गणेर् या सुब्रह्मण्यम या दत्तात्रेय भगवान् ्या ककसी भी अवतार, राम, कृष्ण, सरस्वती या लक्ष्मी, गायत्री या काली, दुगुा िया चर्णी की पूजा कर सकते हैं। सभी एक ही ईश्वर के रूप हैं। चाहे ककसी भी नाम या रूप में हो, यह ईश्वर ही है जजसकी पूजा की जा रही है। पूजा उस रूप में जस्थत अन्तयामिी ईश्वर के पास जाती है। यह सोचना कक एक रूप दूसूरे से श्रेष्ठ है, अज्ञानता है। सभी रूप एक और एक-जैसे ेहैं। शर्व, ववष्णु, गायत्री, राम, कृष्ण, देवी, ब्रह्मा— सब एक हैं। सभी एक ही ईश्वर की पूजा कर रहे हैं। पूजकों में शभन्नता होने के कारण मात्र नामों में शभन्नता है; लेककन पूजा के ववषय में नहीं। मात्र अज्ञानता के कारण ही ववशभन्न िमाविलम्बी आपस में झगड़ा करते ेहैं।

मूर्ता–नवीन आध्याजममक जजज्ञासु के शलए एक अवलम्बन

मूर्त िनवीन आध्याजममक जजज्ञासु के शलए एक सहारा है। यह आध्याजममक रै्र्वकाल में अवलम्बन है। प्रारम्भ में पूजा के शलए एक रूप या मूर्त िआवश्यक है, यह पूजा के शलए भगवान् ्का बाह्य प्रतीक है। यह ईश्वर का अंर् है। स्थूल मूर्त िमानशसक भावों का आह्वान करती है। मन की जस्थरता मूर्तपूिजा से प्रातत होती है। मूर्तपूिजक को अनन्तता, सवर्िजक्तमानता, सवज्ञिता, र्ुद्तिा, पूणतिा, मुक्तता, पववत्रता, समय और ववश्वव्यापकता के भावों से सम्बद् िहोना चाहहए। सभी के शलए मन को परमाममा अथवा अनन्त पर केजन्ति करना सम्भव नहींहै। बृहत् ्जन-समूह को धचत्त को एकाग्र करनेके शलए एक स्थूल रूप आवश्यक होता हैं। ईश्वर को सवत्रि देखना और सवत्रि ईश्वर की उपजस्थर्त की सिाना करना सामान्य व्यजक्त के शलए सम्भव नहीं ंहै। आिुर्नक मानव के शलए मूर्तपूिजा, पूजा का सरलतम रूप है।

मन को लगाने के शलए एक प्रतीक परम आवश्यक है। मन झुकने के शलए अवलम्बन चाहता है। प्रारजम्भक जस्थर्तयों में इसमें परमाममा की िारणा नहीं होती। प्रारजम्भक जस्थर्तयों में बबना ककसी बाह्य सिान की सहायता के मन केजन्ति नहींहोता। आरम्भ में बबना ककसी प्रतीक के एकाग्रता और ध्यान सम्भव नहींहै।

हर कोई मूर्तपूिजक है

वेदों में मूर्त िकी पूजा का कोई ववववरण नहींशमलता। आगम और पुराणों दोनों में ही घरों तथा मजन्दरों में मूर्तपूिजा का ववववरण हदया गया है। मूर्तपूिजा मात्र हहन्दुओं द्वारा नहीं ंकी जाती। ईसाई क्रास की पूजा करते ेहैं। वे

अपनेमन में क्रास की पररकल्पना रखते ेहैं। मुसलमान जब नमाज अदा करते ेहैं, तो काबा का प्रतीक ध्यान में रखते ेहैं। कुछ योधगयों और वेदाजन्तयों के शसवा सारे संसार के लोग मूर्तियों के पूजक हैं। वे कोई-न-कोई प्रतीक या पररकल्पना मन में रखते ेहैं।

मानशसक पररकल्पना भी मूर्त िका ही रूप है। इसमें अन्तर प्रकार का नहीं, वरन् ्अंर्ों का है। सभी पूजक चाहे वे प्रबुद्ि क्यों न हों, वे मन में एक रूप बना लेते और मन को उस पररकल्पना या प्रतीक पर लीन करने का प्रयास करते ेहैं।

हर एक व्यजक्त मूर्तपूजक है। धचत्र आहद भी मूर्त िके प्रकार मात्र हैं। मूढ़ मन को अवलम्बन हेतु एक स्थूल प्रतीक की तथा सूक्ष्म मन को एक अव्यावहाररक प्रतीक की आवश्यकता होती है। यहााँतक कक वेदान्ती भी घुमक्कड़ मन को केजन्ित करनेके शलए ॐ का प्रतीक रखतेहैं। मात्र पमथर या लकड़ी की मूर्तयिा ाँया धचत्र ही प्रतीक नहीं ंहोते,े वरन् ्तकिरास्त्री या नेता भी प्रतीक बन जाते ेहैं। तो मूर्तपूिजा की र्नन्दा क्यों करें ?

ईश्वर से सम्पकि स्थावपत करने का माध्यम

मूर्तयिा ाँककसी मूर्तकिार की आदर् िकल्पनाए ाँनहीं हैं, वरन् ्वे देदीतयमान स्रोत हैं जजनसे ेभक्तों के हृदय ईश्वर की ओर आकृष्ट होते ेऔर भगवान् ्की ओर अववरल रूप से प्रवाहहत होते ेहैं। जब मूर्त िकी पूजा की जाती है, भक्त इसमें ईश्वर की उपजस्थर्त का अनुभव करता है और वह अपनी भजक्त इसमें उड़ेलता है। यह आिुर्नक ववषयी मनुष्य की घोर अज्ञानता है जजसने उसकी दृजष्ट को मेघाच्छन्न कर रखा है और जो उसे ेभगवान् ्के रूप की तयारी और मन्त्रमुग्ि करने वाली मूर्तियों में देवमव का दर्नि करने से रोकती है।

इस सदी की ववज्ञान की प्रगर्त आपको मूर्तपूिजा के महत्त्व को प्रमाण सहहत स्वीकार करनेहेतु बाध्य कर देगी। गायक और भाषण देनेवाले एक छोटे-से डिब्बेमें जजसे ेहम रेडियो कहते ेहैं, कैसे ेबन्द रहते ेहैं? टेपररकािर में से आप कैसे ेगीत सुनते हैं, ब्द जो जीवन रहहत छोटे-छोटे याजन्त्रक र्नमाणि के रूप में यहद एक व्यवजस्थत ढंग से चलाये जाय,ें तो हमें कैसे ेगाने, बातचीत आहद सुनायी देती है? वह भाषण जो ववश्व में कहीं ं हदया गया हो, आप उसे ेहजारों मील दूरू कैसे ेदेख और सुन सकते हैं? जजस प्रकार आप रेडियो और टी.वी. की सहायता से लोगों के धचत्र व आवाज सारे संसार में पकड़ लेते ेहैं, उसी प्रकार मूर्त िके माध्यम से सवव्यािपक ईश्वर के साथ सम्पकि करना सम्भव है। प्रकृर्त के हर अणु में सवव्यािपक ईश्वर की हदव्यता आवेशर्त है। एक बबन्दु-ुभर भी स्थान नहींहै जहा ाँवह न हो। कफर तुम कैसे ेकह सकतेहो कक वह मूर्तियों में नहींहै?

बहुत सेलोग ऐसे हैंजो व्यंग्यपूवकि कहते ेहैं- 'अरे, ईश्वर सवव्यािपक और र्नराकार है। वह इस मूर्त िमें बन्द कैसे ेहो सकता है?" क्या वे लोग ईश्वर की सवव्यािपकता के प्रर्त सदा चैतन्य हैं ? क्या वे सदा हर वस्तु में मात्र उन्हें ही देखते हैं? नहीं, यह उनका अहंकार हैं जो उन्हें भगवान् ्की मूर्त िके आगे ेझुकुने से रोकती है और इसी कारण वे झूठूे बहानेगढ़ते ेहैं।

ररक्त पात्र ही बहुत अधिक आवाज करता है। व्यावहाररक व्यजक्त जो ध्यान और पूजा करता है, जो ज्ञान और सच्ची भजक्त सेपूण िहै, वह सदा शान्त रहता है। वह अन्यों को शाजन्त से शर्क्षा देता और प्रभाववत करता है।
वही जानता है कक प्रारम्भ में एकाग्रता हेतु मूर्त िआवश्यक है या नहीं।

चाहे कोई प्रबुद् क्यों न हो, प्रारम्भ में बबना ककसी प्रतीक के एकाग्रता का अभ्यास नहींकर सकता। एक प्रबुद् और पढ़ा-शलखा व्यजक्त अपनेगव िऔर दम्भ सेकहता है- "म ैंमूर्त िपसन्द नहीं करता। म ैंककसी रूप पर ध्यान नहीं ंकर सकता।" वह नर्राकार पर भी ध्यान नहीं कर सकता। वह सोचता है कक यहद लोगों को मालूम हो जायेगा कक वह ककसी रूप का ध्यान करता है, तो वे उस पर हाँसगें। उसनेकभी नर्राकार पर भी ध्यान नहींककया है। वह बस बातें बनाता, तकि करता और ववशेष जस्थर्त में बैठैता है। वह अनावश्यक वाद-वववाद में अपना जीवन व्यथ िगाँवा रहा है। "एक औंसं अभ्यास टनों शसद्ान्तों से श्रेष्ठ है।" अधिकांशं प्रबुद् व्यजक्तयों में बुद्धि एक बािा है। वे कहते ेहैं- "ब्रह्म का अजस्तमव कोरी कल्पना है। उच्च चेतना की जस्थर्त (समाधि) मन का वहम है और आमम-साक्षामकार वेदाजन्तयों की कल्पना।" ये भ्रशमत आममाएँअज्ञानता में िूबी हुई हैं। वे अपनेलौककक ज्ञान में खखंचें ेचले ेजा रहे हैं जजनकी यहद आममज्ञान से तुलना की जाये, तो मात्र छलका हैं। ऐसे लोगों की मुजक्त की कोई
आशा नहीं ंहै। सवप्रिथम उनके कुसंस्कारों को समसंग द्वारा दूरू करना होगा। तभी वे अपनी गलर्तयों को पहचानेंगे। भगवान् ्उन्हें सद्बुद्धि तथा सही ज्ञान हेतु तयास प्रदान करें!

ईश्वर का प्रतीक

प्रर्तमा प्रर्तनर्धि या प्रतीक है। मजन्दर में मूर्त िचाहे पमथर, लकड़ी अथवा िातु की बनी हो, क्योंकक वह भगवान् ्का धचह्न िारण ककये है तथा यह उसका प्रर्तनर्धिमव करती है जो उसके शलए पववत्र तथा सनातन है; अतः वह भक्त के शलए बहुमूल्य है एक ध्वज एक रंगीन कपड़े का टुकड़ा मात्र है; लेककन एक योद्ा के शलए अमयन्त वप्रय है और वह इस ध्वज की रक्षा के शलए अपनी जान भी देने के शलए तैयार रहता है। इसी प्रकार मूर्त ि भक्त के शलए अमयन्त वप्रय है। यह उससे भजक्त की अपनी ही भाषा में बात करती है। जजस प्रकार ध्वज योद्ा में साहस का संचांर करता है, उसी प्रकार मूर्त िभक्त में भजक्त का संचांर करती है। भगवान् ्मूर्त िके भीतर अध्यारोवपत होते ेहैं और मूर्त िसािक के भीतर हदव्य ववचारों का सृजृन करती है।

एक सादे अथवा रंगीन कागज का कोई मूल्य नहींहोता। आप इसे ेफेंक देते हैं। लेककन यहद इस पर शासन की मुिा अंककत है (रुपये), तो आप इसे ेअपनेबटुए अथवा र्तजोरी में सुरक्षक्षत रखतेहैं, इसी प्रकार एक सािारण पमथर का टुकड़ा आपके शलए कोई मूल्य नहींरखता। आप इसे ेफेंक देते ेहैं। लेकेकन यहद आप इसी पमथर की मूर्त िभगवान् ्कृष्ण के रूप में पण्ढरपुर या अन्य ककसी मजन्दर में देखते ेहैं, तो आप इसके आगे ेहाथ जोड़ कर शसर झुकाते हैं; क्योंकक इस पमथर पर भगवान् ्की मुिा अंककत है। भक्त पमथर की मूर्त िमें ईश्वर और उनकी ववभूर्तयों को अध्यारोवपत करता है।

जब आप एक मूर्त िकी पूजा करते ेहैं, तो आप यह नहींकहते—े "यह मूर्त िजयपुर से आयी है। यह प्रभुशसंहं द्वारा लायी गयी है। इसका वजन ५० पौण्ि है। यह सफेद संगमरमर से बनी है। यह मुझे ५०० रुपये में शमली।" आप भगवान् ्के सभी गुणों का उसमें अध्यारोपण करके प्राथनिा करते ेहैं- "हे अन्तयामिी ! आप सवव्यािपक हैं, आप सवर्जिक्तमान्, ् सदा करुणामय और सवज्ञि हैं। आप सभी वस्तुओं का स्रोत हैं। आप र्नमय और सनातन हैं। आप सजच्चदानन्द हैं। आप मेरे जीवन का जीवन, मेरी आममा की आममा हैं। मुझे प्रकार् और ज्ञान दें। अब मुझे ेसदा के शलए आप में ही लीन होनेदे।" अब जब आपकी भजक्त और ध्यान गहन और प्रबल हो जाते ेहैं, तो आप मूर्त िमें पमथर नहींदेखते। आप वहााँमात्र भगवान् ्के दर्नि करते ेहैं जो सदा चैतन्य है । मूर्तपूिजा प्रारजम्भक सािकों के शलए अमयावश्यक है।

ववराट् का सम्पूण िअंर्

नव-सािक के शलए प्रर्तमा परम आवश्यक है। मूर्त िकी पूजा करने से भगवान् ्प्रसन्न होते ेहैं। प्रर्तमा पंचतत्त्वों से र्नशमति होती है। पंचंतत्त्व भगवान् ्का र्रीर बनाते ेहैं। मूर्त िमूर्त िरहती है, पूजा भगवान् ्के पास जाती है।

यहद आप एक व्यजक्त सेहाथ शमलाते हैं, वह बड़ा ही प्रसन्न होता है। आप उसके र्रीर का छोटा-सा हहस्सा छूते हैंऔर वह बड़ा प्रसन्न होता है। वह मुस्करा कर आपका स्वागत करता है। इसी प्रकार भगवान् ्भी अमयन्त प्रसन्न होते ेहैं, जब उनके ववराट् (ब्रह्माण्ि) र्रीर के छोटे से भाग की पूजा की जाती है। मूर्त िभगवान् ्के र्रीर का छोटा-सा अंर् है। यह सम्पूण िजगत् ्उनका र्रीर है, अथाति ब्रह्माि्यि रूप। भजक्त भगवान के पास जाती है. उपासक भगवान और उनके सभी गुणों को मूर्त िमें स्थावपत करता है। वह मूर्त िकी सोलह गुना पूजा करता है - इसमें भगवान के प्रर्त सम्मान व्यक्त करते हुए सोलह कृमय ककए जाते ेहैं। जैसे ेपद्यम (पैर िोना), अि,ि आसन, स्नान, वस्त्र चढ़ाना, आचमन, चंदन-अशभषेक, अचनिा (फूल चढ़ाना), िूप जलाना, दीपक और कपूर जलाना, महानैवेद्यम आहद। पूजा का यह रूप इस भटकतेमन को दूरू ले जाता है। जजज्ञासु को िीरे-िीरे ईश्वर की र्नकटता का अनुभव होता है। वह हृदय की पववत्रता प्रातत करता है और िीरे-िीरे अहंकार का उन्मूलक करता है।

उस पूजक के शलए जो प्रतीक में आस्था रखता है, ककसी भी प्रकार का प्रतीक ईश्वर का र्रीर है, चाहे वह पमथर, शमट्टी, पीतल, धचत्र, र्ालग्राम आहद ककसी भी रूप में क्यों न हो। ऐसी पूजा कभी भी मूर्तपूिजा नहींहो सकती। सभी पदाथ िईश्वर की ही अशभव्यजक्त हैं। जजस वस्तु का अजस्तमव है, हर उस वस्तु में भगवान् ्उपजस्थत हैं। हर वस्तु पूजा की वस्तु है। सभी में उस भगवान् ्की उपजस्थत है जजनकी उसमें पूजा की जा रही है। पूजा का हर कृमय यह संकेत करता है कक पूजा की वस्तु श्रेष्ठ तथा चैतन्य है। भक्त के द्वारा सभी वस्तुओं को देखनेका यही तरीका होना चाहहए। अपने अशर्क्षक्षत मन को उपरोक्त प्रकार से चीजों को देखने ेका प्रशर्क्षण देना चाहहए।

मूर्तपूजा से भजक्त का ववकास होता है।

मूर्तपूजा मन की एकाग्रता को सरल और सहज बनाती है। आप जजस ववरे्ष अवतार के रूप में भगवान् ् को देखतेहैं, उसकी महान् ्लीलाओंको अपनेमानशसक चक्षुओंके सामनेला सकते हैं। यह आमम-साक्षामकार की सरलतम ववधि है।

जजस प्रकार प्रशसद् योद्िा का धचत्र आपके हृदय में पराक्रम जगाता है, उसी प्रकार भगवान् ्के धचत्र को देखने ेसे यह आपके मन को हदव्य ऊँचाइयों तक उठाता है। जैसे ेबच्ची अपनी गुडड़या की देखभाल, सेवा, दूि वपलाने के काल्पर्नक कृमयों के द्वारा भववष्य के मातृमृव भाव का ववकास करती है, उसी प्रकार भक्त प्रर्तमा की पूजा करके औरउसका ध्यान करकेभजक्तभाव का ववकास करता है।

र्नयशमत पूजा मूर्त िमें जस्थत देवमव को अनावृतूत करती है

र्नयशमत पूजा तथा पूजा की अन्य ववधिया ाँजो मूर्त िमें हदव्यता को पहचानने की हमारी आन्तररक भावना को बताती हैं, वे इसमें र्छपेदेवमव को अनावृतूत करती हैं। यह वास्तव में एक आश्चय िऔर चममकार है। धचत्र सजीव हो उठता है। मूर्त िबोल पड़ती है। यह आपके प्रश्नों का उत्तर देती है और आपकी समस्याओं का समािान करती है। आपमें जस्थत भगवान् ्के पास मूर्त िमें र्छपेदेवता को जागृत करने की र्जक्त है। यह एक र्जक्तर्ाली लैम की भार्ाँत है जो मय िकी ककरणों को रूई के बण्लि पर केजन्ित करता है। न तो लसैं अजग्न है, और न रूई अजग्न है और न ही सूय िकी ककरणें स्वयं रूई को जला सकती हैं। जब ये तीनों एक ववरे्ष क्रम में एक-साथ लाये जाते ेहैं, तो अजग्न उमपन्न होती है और रूई जल जाती है। ऐसा ही मूर्त,ि सािक तथा सवव्यािपक हदव्यता के ववषय में भी है। पूजा मूर्त िको हदव्य ज्योर्त से देदीतयमान बनाती है। मूर्त िवह लसैं है जो हदव्यता की ककरणों को केन्द्रिभूत करता है और सािक को हदव्य ज्ञान के प्रकार् से प्रकाशर्त कर देता है। अब ईश्वर जो मूर्त िमें स्थावपत हैं, वे आपकी ववरे्ष प्रकार से रक्षा करते ेहैं। मूर्त िचममकार करती हैं। वह स्थान जहााँ यह स्थावपत है, तमक्षण मजन्दर में ही नहीं, बजल्क वैकुण्ठ या कैलास में रूपान्तररत हो जाती है। जो ऐसेस्थान में रहते ेहैं, कष्टों से, रोगों से, असफलताओं से और संसार से भी स्वयं ही मुक्त हो जाते ेहैं। मूर्त िमें जाग्रत देव एक देवदूत की तरह सभी को आर्ीवादि देते ेहैं और जो इसेनमन करतेहैंउनका कल्याण करतेहैं ।

मूर्त िचेतना का पुंज

मूर्त िदेवमव का प्रतीक मात्र है। भक्त उसमें पमथर, लकड़ी या िातु को नहीं देखता । यह उसके शलए भगवान् ्का प्रतीक है। वह मूर्त िमें ईश्वर की उपजस्थर्त देखता है। दक्षक्षण भारत के सभी र्तरसठ नयनार सन्तों ने शर्वशलगं की पूजा करके ईश्वर का साक्षामकार ककया था। मूर्त िभक्त के शलए चेतना का पुंज है। वह मूर्त िसे प्रेरणा

प्रातत करता है। मूर्त ि उसका मागदिर्नि करती है। उससे बातें करती है। यह उसकी ववशभन्न प्रकार से सहायता करने के शलए मानव का रूप ि ारण कर लेती है। मदुरै के मजन्दर में जस्थत शर्वजी की मूर्त ि ने एक लकड़हारे और वृदि्ा स्त्री की मदद की थी। र्तरुपर्त में जस्थत मूर्त ि नेमानव रूप ि ारण कर अपनेभक्तों की सहायता के शलए न्यायालय में गवाही दी थी। कई ऐसे अद्भुत और रहस्यमय उदाहरण हैं और केवल भक्त ही उन्हें समझ सकते हैं।

जब मूर्तयिा ाँसजीव हो उठ ें

भक्त और सन्त के शलए कोई भी वस्तु जड़ या र्नजीव नहींहै। हर वस्तु वासुदेव या चैतन्य' **'वासिुेवः सवं ंइर्त'** है। भक्त मूर्त ि में वास्तव में ईश्वर के दर्नि करते े हैं। एक राजा द्वारा नरसी मेहता को परीक्षण हेतु बुलाया। राजा ने कहा "हे नरसी, यहद तुम भगवान् ् कृष्ण के सच्चे भक्त हो और कहतेहो कक यह मूर्त ि स्वयं भगवान् ् कृष्ण है, तो इस मूर्त ि को चला कर हदखाओ।" नरसी मेहता द्वारा प्राथनिा करनेसे मूर्त ि चलने लगी। तुलसी दास द्वारा शर्वजी की मूर्त ि के सामने अवपति भोग को पववत्र नन्दी ने ग्रहण ककया। मूर्त ि मीराबाई के साथ खेलती थी। यह उनके शलए जीवन और चेतना से पूण ि थी।

जब दक्षक्षण भारत जस्थत र्तरुपर्त के मजन्दर में अतपय्या दीक्षक्षतार गये, तो वैष्णवों ने उन्हें भीतर प्रवेर् नहींकरने हदया। अगले े हदन प्रातः उन्होंनेदेखा कक ववष्णुभगवान् ् की मूर्त ि शर्वमूर्त ि में बदल गयी। महन्त को बड़ा ही आश्चय ि हुआ और वह भौंचक्का रह गया और उसने अतपय्या दीक्षक्षतार से मूर्त ि को पुनः ववष्णु ु भगवान् ् की मूर्त ि में बदलनेकी प्राथनिा की।

उडिवप में कनकदास भगवान् ् कृष्ण के महान् ् भक्त थे। यह स्थान दक्षक्षण भारत के दक्षक्षण कनाटिक के एक जजले े में जस्थत है। वे नीची जार्त के थे, इस कारण उनको मजन्दर में प्रवेर् करने की अनुमर्त नहीं ं शमली। वे मजन्दर की पररक्रमा करने के शलए गये, वहााँउन्होंनेएक खखड़की मजन्दर के पीछे देखी। वे उस खखड़की के सामने बैठ गये और भगवान् ् कृष्ण के भजन गाने में सिु-बिु खो बैठे। उनका मिुर गान सुन कर बहुत से लोग उनको घेर कर खड़े े हो गये। वे उनकी मीठ आवाज और भजक्त की गहराई देख कर उनकी ओर आकृष्ट हो गये। भगवान् ् कृष्ण भी पीछे की ओर घूम गये जजससे े कनकदास भी उनके दर्नि कर सकें। पुजारी लोग आश्चय ि से गड़ेरह गये। आज भी तीथयिात्री उस खखड़की और उस स्थान के दर्नि करते े हैं जहा ाँ कनकदास बैठै कर गा रहे थे।

मूर्त ि भी भगवान् ् की ही भार्ाँत है। इसके शलए जो देवता हैं, उनका मन्त्र अशभव्यजक्त का सिान है। मजन्दर में जस्थत मूर्त ि के प्रर्त भक्त का यही भाव होना चाहहए अथात् ि ् उसे े यह अनुभव करना चाहहए जैसे े भगवान् ् उसके सामनेव्यजक्त के रूप में प्रकट हैं और उससे स्पष्ट स्वर में बात कर रहे हैं।

वेदान्त और मूर्तपूिा

एक पक्का वेदान्ती मजन्दर में मूर्त िको नमन करने में लज्जा का अनुभव करता है। वह अनुभव करता है कक यहद वह स्वयं को झुकायेगा, तो उसका अद्वैत वाष्पीकृत हो जायेगा। प्रशसद्ि तिशमल सन्तों अतपार, सुन्दरार, सम्बिार आहद की जीवनी पहढ़ए। उनको उच्च अद्वैर्तक साक्षामकार था। वे सवत्रि भगवान ्शर्व का दर्नि करते ेथेऔर उन्होंने भगवान ्शर्व के सारे मजन्दरों के दर्नि ककये, मूर्त िके सामने दण्वित ्ककया और स्तुर्त की। उनके गाये भजन आज भी गाये जाते ेहैं। र्तरसठ नयनार सन्तों ने भगवान ्शर्व की मूर्तयिों की आममभाव से पूजा की और भगवत्–साक्षामकार प्रातत ककया। वे मजन्दरों में झािू लगाते, फूल चुनते, भगवान ्के शलए माला बनाते ेऔर मजन्दर में दीप जलाते। वे अनपढ़ थे; लेककन उन्होंनेउच्च साक्षामकार प्रातत ककया। वे व्यावहाररक सच्चे योगी थे। और उनके हृदय में सच्ची भजक्त थी। वे कमयिोग की मूर्तमित्ता थे। इन सभी ने सजम्मश्र योग की सािना की। मजन्दर की मूर्त िउनके शलए पूण िचैतन्य थी । यह मात्र पमथर का टुकड़ा नहींथी।

मिुसूदन स्वामी जो अद्वैरै्तक साक्षामकार प्रातत थे, जो आममा के साथ एकमव का अनुभव करते ेथे, जजनका अद्वैर्तक भाव था, वे भगवान ्के हाथों में मुरली शलये हुए रूप से अमयन्त प्रेम करते ेथे।

तुलसी दास ने ईश्वर की सवव्यिापकता का साक्षामकार ककया। उनको हदव्य चेतना थी। वे सवव्यिापक ईश्वर के साथ वातालिाप करते ेथे; लेककन कफर भी भगवान ्श्री राम के िनुिारिी रूप को देखनेकी उनकी इच्छा थी। वृन्दावन में उन्होंनेमुरली शलये कृष्ण को देखा, तो वे बोले-"म ैंइस रूप के सामनेशसर नहीं झुकाऊँगा।" भगवान ् उसी क्षण राम का रूप िारण कर उनके सामनेआ गये और तभी तुलसीदास जी ने मस्तक झुकाया ।

तुकाराम जी का अनुभव भी तुलसी दास जी की तरह था। वे अपनेअभंग में गाते थे– "म ैंअपनेभगवान ् को उसी प्रकार सभी जगह देखता हूँ जैसे ेगन्ने में र्क्कर सवत्रि व्यातत है।" कफर भी वे पण्ढरपुर में भगवान ् ववट्ठल से जाघोँ पर हाथ रख कर बातें करते ेथे। मीरा नेसवव्यिापक कृष्ण से अपनी एकाममकता का साक्षामकार कर शलया था; लेककन कफर भी यह गाते थकती नहींथी- -**"मेरे तो गगरधर गोपा "** ।

उपरोक्त तथ्यों से हमें यह स्पष्ट हो जाता है कक मूर्त िकी पूजा द्वारा कोई भगवत्–साक्षामकार कर सकता है, तथा यह कक भगवान ्की सगुण रूप में पूजा वेदाजन्तक साक्षामकार के शलए भी बड़ी सहायक है और भगवान ्के साक्षामकार के शलए प्रारम्भ में ध्यान और एकाग्रता के शलए मूर्त िकी पूजा अमयन्त आवश्यक है और यह कक ऐसी पूजा दैवी चेतना की प्राजतत में ककसी भी प्रकार बािक नहींहै और जो मूर्तपूिजा पर उग्रतापूवकि प्रहार करते ेहैं, वे अज्ञानता के घोर अन्िकार में भटक रहे हैंऔर उन्हें पूजा और उपासना का सही ज्ञान नहींहै और वे स्वयं को ववद्वान ्बताने के शलए मूर्तपूिजा के ववरुद्ि अनावश्यक वववादों और तकों में उलझेहुए हैं और उन्होंने कभी भी कोई सच्ची सािना नहींकी है। ये वही लोग हैं जो अपनी आदतों और व्यवसाय के बारे में बड़ी-बड़ी और आदर्ि बातें बनाते ेहैं। वे स्वयं को भ्रशमत कर रहे हैं। वे असंख्य लोगों के मनों को भी ववचशलत और भ्रशमत करते े हैं। सारा संसार मूर्तयिों और प्रतीकों की ककसी-न-ककसी रूप में पूजा करता है।

प्रारम्भ में मन को ककसी स्थूलू ववषय या प्रतीक पर केजन्ति करने से यह अनुराशसत होता है। जब यह जस्थर और सूक्ष्म हो जाता है, तो बाद में इसे ेककसी अव्यावहाररक ववचार जैसे े**'िअे ब्रह्मान्स्म'** पर केजन्ति ककया जा सकता है। जब कोई ध्यान में आगे ेबढ़ जाता है, तो आकार नराकार में लीन होने लगता है और वह नराकार के साथ एक हो जाता है। मूर्त िया प्रतीक पूजा वेदान्त के दृजष्टकोण की ववरिोी नहींहै। यह उसकी सहायक है।

वैिी भजक्त से परा भजक्त

भजक्त दो प्रकार की है—उच्च भजक्त या परा भजक्त और नम्न भजक्त। इसे ेवैिी या गौणी भजक्त कहते े हैं। यह औपचाररक भजक्त है। वैिी भजक्त नम्न प्रकार की भजक्त है जो बाह्य सािनों पर नभरि है। इससे मन रुद्िऔर पववत्र हो जाता है। इस पूजा के द्वारा जजज्ञासु भगवान ्के प्रर्त प्रेम का िीरे-िीरे ववकास करता है। वह इस पूजा में घण्टी बजाता है, प्रतीक या प्रर्तमा की पूजा करता है। आरती करता है। पुष्प अवपति करता है। चन्दन लगाता है। िूप-दीप जलाता है। भगवान ्को नैवेद्य, भोग आहद अवपति करता है।

मुख्य भजक्त या पराभजक्त उच्च प्रकार की भजक्त है। यह सभी सीमाओंको लाघँ जाती है। इस प्रकार का भक्त कोई नयम नहींजानता । वह कोई बाह्य पूजा नहींकरता। वह सवत्रि ईश्वर के दर्नि करता है। सभी वस्तुओं में ईश्वर को ही देखता है। उसका हृदय ईश्वर के प्रर्त प्रेम से पररपूण िरहता है। सारा संसार उसके शलए वृनूदावन है । उसकी जस्थर्त अवणनिीय है। वह परमानन्द प्रातत करता है। वह जहा ँभी जाता है प्रेम, पववत्रता और आनन्द ववकीण िकरता है और जो भी उसके सम्पकि में आते ेहैं, उन सभी को प्रेररत करता है।

वह जजज्ञासु जो प्रारम्भ में मूर्त िकी पूजा करता है, वह भगवान ्को सवत्रि देखता है और परा भजक्त का ववकास करता है। वैिी भजक्त सेउसे ेरागाजममका अथवा प्रेमा भजक्त प्रातत होती है। वह सारे संसार को भगवान ् की भार्ँत देखता है। अच्छे-बुरे, सही-गलत, िूत िआहद के ववचार समातत हो जाते ेहैं। वह िूत,ि िाकू, कोबरा, बबच्छू, चींटी, कुत्ते, पेड़, लकड़ी के लट्ठे, पमथर के टुकड़े, सूय,ि चन्िमा, तारे, अजग्न, जल, पृथूवी आहद में ईश्वर को देखता है। उसकी दृजष्ट या अनुभव वणनि से परे होते ेहैं। िन्य हैं ऐसे भक्त जो सच में ईश्वर ही हैं, जो लोगों को इस संसार के दलदल से उठाते ेहैं और उनकी मृमृयु के चंगुल से रक्षा करते ेहैं।

हहन्दुमुव जजज्ञासु को पाधथवि प्रतीक से मानशसक प्रतीकों की ओर प्रेररत करता है और इन ववववि प्रकार की मानशसक पररकल्पनाओं को व्यजक्तगत ईश्वर की ओर, कफर व्यजक्तगत ईश्वर से अवैयजक्तक परमाममा या नगुिण ब्रह्म की ओर प्रेररत करता है।

हहन्दू ूदर्नि का महत्त्व

हहन्दू ◌ूदर्नि और पूजा की हहन्दुओं की ववधि ककतनी उमकृष्ट है ? यह मूर्त ◌िकी पूजा के साथ ही समातत नहींहोती। मूर्तपूजा के द्वारा सिाक भजक्त की उच्च जस्थर्तयों की ओर, और समाधि या सम्पकि की ओर नैः-नैः जाता है। हालांकक वह मूर्त ◌िकी पूजा करता है; परन्तुउसे ◌ेअपनेमानशसक चक्षुओं के सामने सवव्यापक ईश्वर को रखना चाहहए। उसे ◌ेअपनेहृदय और सभी चीजों में भी उनकी उपजस्थर्त का अनुभव करना चाहहए । यहााँतक कक छोटी-सी मूर्त ◌िकी पूजा करते ◌ेसमय पुरुषसूक्त पढ़ना चाहहए और ववराट् पुरुष जो असंख्य हाथों, अनधगनत आखोँ, अनधगनत शसर वाले हैं, ववश्व से परे जजनका ववस्तार है, उनका तथा भगवान् ◌्या आममा जो सभी प्राखणयों के हृदय में रहते ◌ेहैं, उनका ध्यान करना चाहहए। वही मनुष्य जो मूर्त ◌िके सामनेिूप जलाता है, अगरबत्ती लगाता है, कपूरि जलाता है, कहता है- "वहा ◌ाँन तो सूय ◌िचमकता है न चन्मिा, न ही तारे न ही ववद्युत्, ◌् तो कफर थोड़ी अजग्न वहा ◌ाँकैसे ◌ेचमक सकती है? सभी उनके बाद ही चमकती हैं। उनकी द्युर्त ही केवल सारे संसार को द्युर्तमान करती है।" पूजा के र्नयम और ववधि (विैी भजक्त) और पूजा के रहस्य जो हहन्दू ◌ूर्ास्त्रों में वखणति हैं, वे वैज्ञार्नक रूप से सही तथा उच्च न्यायसंगत हैं। जजन्होंने र्ास्त्रों का अध्ययन नहींककया और जो भक्तों और महाममाओं के साथ सम्पकि नहींकरते, ◌े वे अज्ञानी लोग ही मूर्तपूजा की र्नन्दा करते ◌ेहैं।

हर अन्य ◌िम ◌िकुछ ववर्ेष र्नजश्चत मतों पर चलता है और लोगों को उसका अनुकरण करने के शलए बलपूवकि प्रयास करता है। यह एक प्रकार की औषधि बहुत से रोगों के उपचार हेतु दी जाये, वैसा ही हुआ। यह सभी को सभी जस्थर्तयों में एक ही प्रकार का भोजन प्रदान करता है। यह सभी अनुयार्ययों के सामनेएक ही प्रकार का कोट रखता है जो अलबटि, अटकक्ंसन, अहलुवाशलया, ऐंटोनी, अब्दुलु रहमान —सबको आ जाना चाहहए। लेककन हहन्दू ◌ूजानते ◌े हैं कक मूर्तयिों, क्रास आहद प्रारम्भ में एकाग्रता के शलए और मन को केजन्ति करने के शलए ववशभन्न प्रतीक हैं। ये बहुत-सी खहूाँटया ◌ाँहैं, उनकी आध्याजममक ◌ारणाओंऔर आस्थाओं को टागाँने के शलए। प्रतीक हर
ककसी के शलए आवश्यक नहीं है। यह हहन्दुमुव में सभी के शलए अर्नवाय ◌िभी नहींहै। यह उच्च योगी अथवा सिाक हेतु आवश्यक नहींहै। प्रतीक एक स्लेट की तरह है जो पहली कक्षा के बच्चे के शलए उपयोगी है। जजनको इसकी आवश्यकता नहीं, उनको यह कहने का अधिकार नहींहै कक यह गलत है। यहद वे यह कहते ◌ेहैं कक यह गलत है, तो वे अपनी अज्ञानता प्रकट कर रहे हैं।

उपसंहार

प्रारम्भ में मूर्त ◌िकी पूजा करनेमें गलत कुछ भी नहींहै। आपको मूर्त ◌िमें भगवान् ◌्और उनके गुणों का अध्यारोपण करना चाहहए। आपको उस अन्तराममा के बारे में अवश्य सोचना चाहहए जो मूर्त ◌िमें र्छपी हुई है। जजज्ञासु नैः-नैः यह अनुभव करने लगता है कक वह मूर्त ◌िमें जजस भगवान् ◌्की पूजा करता है, वह ववश्व के सभी प्राखणयों के हृदय में तथा सभी नाम-रूपों में जस्थत है। वह ईश्वर की उपजस्थर्त का सवत्रि अनुभव करने लगता है।

मूर्तिपूजा िम िका आरम्भ है। नश्चय ही यह अन्त नहीं। वहीं हहन्दू िूम िर्ास्त्र जो प्रारजम्भक सािकों को मूर्तिपूजा करने हेतु नदेर् देते ेहैं, वही उच्च सािकों को अनन्त या परमामा का ध्यान करने, महावाक्य **'तत् ्**
त्वम् ्अशस' के महत्त्व का ध्यान करने हेतु कहते ेहैं।

पूजा के ववशभन्न स्तर हैं। सबसे ेपहला है मूर्तियों की पूजा, अगला है मन्त्र-जप और प्राथना। मानशसक पूजा, पुष्पों से पूजा करने से अधिक श्ेरेष्ठ है। परमामा या नगुिण ब्रह्म पर ध्यान सवश्ेरेष्ठ है।

परम जस्थर्त है आमम-साक्षामकार अथवा ब्रह्म-साक्षामकार। द्ववतीय श्ेरेणी है ध्यान। योगी सािना या परमामा पर नरन्तर ध्यान करता है। तृतीय है प्रतीक पूजा। चतुथ िहै िाशमकि कमकिाण्ि करना तथा पववत्र स्थानों की तीथयात्रा। र्ास्त्र और गुरु दयालु माताए ाँहैं। वे जजज्ञासुओं का हाथ पकड़ कर नैः-नैः एक स्तर से दूसूरे स्तर तक तब तक ले कर चलती हैं, जब तक वे नववकिल्प समाधि या उच्च चेतना जस्थर्त में स्थावपत नहीं ं हो जाते। वे नवीन जजज्ञासुओं के शलए सािना के बहुत से प्रकार बताते ेहैं और उच्च सािकों के शलए जो कक पववत्र, सूक्ष्म व तीक्ष्ण बुद्धि सेयुक्त हैं, असम्बद्ि या अव्यावहाररक ध्यान की ववधि बताते ेहैं।

सभी ववकास की जस्थर्तयााँहैं। मानव आममा अपनी सामथ्य,ि ववकास की जस्थर्त के अनुसार अनन्त या परमामा को ग्रहण करने और साक्षामकार करने के शलए ववशभन्न प्रकार के प्रयास करती है। वह उच्च और उच्च होती जाती है और अधिकाधिक बल प्रातत करती है और परमामा में स्वयं को ववलीन करके एकाममकता प्रातत कर लेती है।

हहन्दू ूऋवषयों और हहन्दू ूर्ास्त्रों को िन्यवाद जो जजज्ञासु को पूजा के नम्न से उच्च रूप तक ले कर जाते ेहैं। वे उसकी नगुिण, सवव्यािपक, नराकार, ब्रह्म अनन्त और उपनषदों के पूण िब्रह्म में ववश्राम करने में सहायता करते ेहैं।

ईश्वर की वप्रय सन्तानो! अपने अज्ञानतापूण िअववश्वास को इसी क्षण मयाग दें। इसी क्षण से अपनेहृदय में परम दृढ़ आस्था को बसाय।ें अपनेमन को श्री मीरा, श्री रामकृष्ण परमहंस और दक्षक्षण भारत के आलवार और नयनार सन्तों के महहमामय उदाहरणों की स्मृरूत हदलाय।ें उन्होंनेववश्वास ककया, उन्होंने समृद्ि आध्याजममक फल को प्रातत ककया। यहद आपकी मूर्तिपूजा में ऐसी आस्था है, तो आप भी महान् ्र्ाजन्त, प्रसन्नता और समृद्धि का यहा ाँआनन्द ले सकते हैं तथा उन्हें यहींअभी प्रातत कर सकते हैं।

चाहे आप नयशमत समयावधि के बाद बाह्य पूजा करते ेहों; परन्तु अपने हृदय के भीतर ईश्वर की आन्तररक पूजा को अखण्ि रूप से चलने दें। तब पूजा पूणता को प्रातत करती है। जीवन एक हदव्य आरािना है। आप दैनक जीवन में ववराट् की ववश्व-पूजा का महत्त्व जानें और इसको करके जीवन का परम लक्ष्य प्रातत करें। ईश्वर की कृपा आप सब पर सदा बनी रहे !

मजन्दर

भगवान् ्का मजन्दर इस कशलयुग औरहदनप्रर्तहदनकेजीवन के व्यस्त भौर्तक संसार में ध्यान और भजक्त द्वारा मनुष्य के ववकास हेतु महान् ्अवसर उपलब्ि कराता है। मजन्दर का पररसर इतना पववत्र होता है और र्ाजन्त प्रदान करता है जो और ककसी वातावरण में नहीं ंशमल सकती। सम्पूण िक्षेते्र में हदव्य तरंगें होती हैं। हदन के तीनों कालों में र्नयशमत पूजा, वेदों के पववत्र ववर्ेष मन्त्रों के उच्चारण से मजन्दर का मंगलकारी वातावरण हदन-प्रर्तहदन श्रेेष्ठ और श्रेेष्ठ होता जाता है और यह मानव की आममा को बहुत ऊपर उठा देता है।

वह मजन्दर जहा ाँपरमेश्वर की प्रर्तमा स्थावपत है, वह एक पववत्र स्थान है और यह एक र्जक्तर्ाली आध्याजममक प्रभाव फैलाता है जो लोगों के मनों को उच्चतम पववत्रता की जस्थर्त में रूपान्तररत कर देता है। प्राथनिा, जागरण, अशभषेक और अचनिा के द्वारा मजन्दर में जो र्नमय पूजा की जाती है, वह सारे वातावरण को पववत्रता तथा वैभव से युक्त कर देती है और जब मजन्दर में प्रवेर् करते ेहैं, तो यह सबके मन में पूज्य भाव, करुणा और भजक्त की भावना उमपन्न करती है। लेककन मजन्दर में देवता की पूजा के शलए जो र्नयम हैं, उनका पालन, आन्तररक और बाह्य दोनों पववत्रता बनाये रखना अमयावश्यक है। मजन्दर की पववत्रता का साविानीपूवकि ध्यान रखना आवश्यक है।

मजन्दर भगवान् ्के अचावितार को समवपति होता है और यह ववराट् पुरुष के र्रीर का दृश्यमान प्रस्तुर्तकरण है और मजन्दर में ककये जानेवाले पूजा के कृमय आध्याजममक सािना की सम्पूण िववधि को व्यक्त करने की वास्तववक कक्रयाएँ ह।ैं जजस अन्तयामिी ईश्वर की मजन्दर में पूजा की जाती है, जजसनेइस ब्रह्माण्ि को

व्यातत ककया है, मजन्दर उसी ईश्वर का लघु प्रर्तरूप है। श्रुर्तयों के, स्मृर्तयों और तन्त्रों के र्जक्तर्ाली मन्त्रों द्वारा भगवान् ्का आह्वान ककया जाता है और मजन्दर में मूर्त ि देवमव की र्जक्त का प्रकट स्वरूप बन जाती है और यह समवपति अचकि की योग्य जजज्ञासा को पूण िकरनेमें समथ िहोती है।

सवर्जिक्तमान् ्के प्रर्त प्रेम के ववकास हेतु अचनिा सरलतम और सुरक्षक्षत सािन है। इसके शलए यह ईश्वर और संसार के मध्य एक सेतु का काय िकरती है।

अचनिा भजक्त की यह ववर्ेषता है कक यह भजक्तपूवकि अवपति ककये जाने वाले भौर्तक सािनों (जो कक ईश्वर का ही प्रकट रूप हैं) के द्वारा मनुष्य में ि ाशमकि चेतना के सूक्ष्म रूपों का आह्वान करनेका प्रयास करती है। अथात् ि्अचनिा वह नींव है जजस पर आध्याजममक प्रयमन और साक्षामकार का भव्य प्रासाद खड़ा होता है।

भगवान् ्की पूजा प्रबल आस्था और लालसा के साथ करें। भगवान् ्अवश्य ही आप पर कृपा करेंगे। वे सभी िन्य हैं

जजनके [illegible]
हैं, जो स्वयं इसके सामने आस्था से नमन करते ेहैं तथा इसमें जस्थत ईश्वर को लगन और प्रेम से सजाते हैं। भगवान् ्सवत्रि हैंऔर वे सभी प्राखणयों के प्रर्त अपनी करुणा के कारण ववर्ेष स्थानों में स्वयं की पूजा करने की अनुमर्त प्रदान करते ेहैं।

प्रसाद की महहमा

प्रसाद वह है जो र्ाजन्त प्रदान करे। कीतनि, पूजाहवन्और आरती में भगवान् ्को बादाम, ककर्शमर्,
दूि, शमठाइयााँऔर फल आहद अवपति ककये जाते ेहैं, वेभगवान् ्को अवपति करने के पश्चात् ्घर के सदस्यों या
मजन्दर में भक्तों के मध्य ववतररत कर हदये जाते ेहैं। बबल्व-पत्र, पुष्प, तुलसी, ववभूर्त आहद से पूजा की जाती है
और बाद में इन्हें प्रसाद के रूप में ववतररत कर हदया जाता है। भस्म भगवान् ्शर्व का प्रसाद है। यह मस्तक पर लगायी
जाती है। और थोड़ी खायी जाती है। कुंकुम श्री देवी या र्जक्त का प्रसाद है। इसेदोनों भौंहों के मध्य (आज्ञा
या भ्रूमध्य) में लगाते ेहैं। तुलसी भगवान् ्ववष्णु, राम या कृष्ण का प्रसाद है। इसे ेखाते हैं। ये सभी पूजा और
हवन
के समय बोले जानेवाले मन्त्रों सेगुतत र्जक्तयों से आवेर्शत हो जाते ेहैं ।
भोग अवपति करने वाले भक्त का भगवान् ्के प्रर्त जो मानशसक भाव होता है, उसका सवाधिक प्रभाव
होता है। यहद कोई लगनर्ील ईश्वर का भक्त भगवान् ्को कुछ अवपति करे और वह प्रसाद शलया जाये, तो यह
नाजस्तक लोगों के मन पर भी बड़ा ही प्रभाव िालता है और उन्हें पररवर्तति कर देता है। प्रसाद से भगवान् ्की कृपा
प्रातत होती है। नारद का चररत्र पहढ़ए। आप भगवान् ्के प्रसाद तथा उच्च सिाकों और सन्तों की महानता को जान
जायगें।

यहद सच्चे हृदय सेभगवान् ्को भोग अवपति ककया जाये, तो भगवान् ्मानव-रूप िारण कर उसे ेग्रहण
करते ेहैं। नामदेव ने भगवान् ्को चावल आहद का भोग लगाया और प्रभु ने नामदेव के साथ ही उसे ेग्रहण भी
ककया। अन्य जस्थर्तयों में प्रभु अवपति भोज्य पदाथों के सूक्ष्म सार को ग्रहण करते ेहैं और बचा हुआ भोजन प्रसाद
होता है। जब महाममाओं और र्निनों को भोजन कराया जाता है, तो र्ेष बचे भोजन को प्रसाद की भार्ाँत शलया
जाता है। जब यज्ञ ककया जाता है, तो इसमें भाग लेने वाले ेप्रसाद को आपस में बाटाँ लेतेहैं। यह भगवान् ्का
आर्ीवादि प्रदान करता है। जब राजा दर्रथ ने पुत्रेजष्ट (पुत्र की कामना से) यज्ञ कराया, तो अजग्न भगवान् ्ने उन्हें
खीर से भरा एक पात्र प्रसाद रूप में हदया, जजसे ेराजा नेअपनी रार्नयों को दे हदया। इसे ेग्रहण करने के बाद वे
गभवविती हो गयीं ं(बाद में उन्हें श्री राम, लक्ष्मण, भरत और र्त्रुघ्न पुत्र-रूप में प्रातत हुए)। प्रसाद भक्त के शलए
अमयन्त पववत्र वस्तु होता है। प्रसाद ग्रहण करने में समय, स्थान और जस्थर्त का कोई प्रर्तबन्ि नहींहै। प्रसाद
सदा र्ुद्धि करने वाला है।

प्रसाद और चरणामृत से प्रातत होनेवाले लाभों का वणनि करना सम्भव नहीं है। उनमें मनुष्य के जीवन
के प्रर्त दृजष्टकोण को पूणतिया पररवर्तति करने की सामथ्य िहोती है। प्रसाद और चरणामृत में रोग मुजक्त तथा

यहााँतक कक मृत् व्यजक्त को जीवन प्रदान करने की सामथ्य िहोती है। हमारी पववत्र भूशम में पूवि–काल में ऐसी अनेक घटनाए ाँहुई हैं जो प्रसाद की र्जक्त और प्रभाव की साक्षी हैं। प्रसाद समस्त दु:खों और पापों का नार् करता है। यह कष्टों, ददि और 'धचन्ता की अचूक औषधि है। इस वाक्य की प्रामाखणकता के परीक्षण हेतु पूण िआस्था का होना सबसे अधिक आवश्यक है। आस्थावविहीन लोगों में इसका अमयन्त कम प्रभाव होता है।

जो आिुर्नक शर्क्षा और संस्कृत में पले-बढ़े हैं, वे प्रसाद की महहमा को ववस्मृत् कर बैठे हैं। बहुत से अगाँरेजी शर्क्षा प्रातत व्यजक्त उस प्रसाद का महत्त्व भी नहीं समझते ेजो उन्हें ककसी महाममा से प्रातत होता है। यह गम्भीर भूल है। प्रसाद महान् ्रुद्धिकारक है। चूाँकक वे पजश्चमी लोगों की भार्ाँत जीवन जीते ेहैं और वे पजश्चमी लोगों के भावों का अनुकरण करतेहैं, इस कारण वे प्राचीन काल के ऋवषयों की सच्ची सन्तानों के स्वभाव को भूल गये हैं। एक सतताह तक वृन्दावन या अयोध्या या वाराणसी अथवा पण्ढरपुर में र्नवास कीजजए, आप प्रसाद के महत्त्व और अद्भुत प्रभावों को पहचान लेंगे। प्रसाद से बहुत से असाध्य रोग ठ क हो गये। बहुत से लगनर्ील भक्तों को प्रसाद मात्र से आश्चयजिनक आध्याजममक अनुभव प्रातत हुए। प्रसाद रामबाण औषधि है। प्रसाद आध्याजममक रसायन है। प्रसाद भगवान् ्की कृपा है। प्रसाद सबकी औषधि है। प्रसाद र्जक्त का साकार रूप है। प्रसाद प्रकट रूप में में रोग मुजक्त तथा यहााँतक कक मृत् व्यजक्त को जीवन प्रदान करने की सामथ्य िहोती है। हमारी पववत्र भूशम में पूवि– -काल में ऐसी अनेक घटनाए ाँहुई हैं जो प्रसाद की र्जक्त और प्रभाव की साक्षी हैं। प्रसाद समस्त दु:खों और पापों का नार् करता है। यह कष्टों, ददि और धचन्ता की अचूक औषधि है। इस वाक्य की प्रामाखणकता के परीक्षण हेतु पूण िआस्था का होना सबसे अधिक आवश्यक है। आस्थावविहीन लोगों में इसका अमयन्त कम प्रभाव होता है।

जो आिुर्नक शर्क्षा और संस्कृत में पले-बढ़े हैं, वे प्रसाद की महहमा को ववस्मृत् कर बैठे हैं। बहुत से अगाँरेजी शर्क्षा प्रातत व्यजक्त उस प्रसाद का महत्त्व भी नहीं समझते ेजो उन्हें ककसी महाममा से प्रातत होता है। यह गम्भीर भूल है। प्रसाद महान् ्रुद्धिकारक है। चूाँकक वे पजश्चमी लोगों की भार्ाँत जीवन जीते ेहैं और वे पजश्चमी लोगों के भावों का अनुकरण करतेहैं, इस कारण वे प्राचीन काल के ऋवषयों की सच्ची सन्तानों के स्वभाव को भूल गये हैं। एक सतताह तक वृन्दावन या अयोध्या या वाराणसी अथवा पण्ढरपुर में र्नवास कीजजए, आप प्रसाद के महत्त्व और अद्भुत प्रभावों को पहचान लेंगे। प्रसाद से बहुत से असाध्य रोग ठ क हो गये। बहुत से लगनर्ील भक्तों को प्रसाद मात्र से आश्चयजिनक आध्याजममक अनुभव प्रातत हुए। प्रसाद रामबाण औषधि है। प्रसाद आध्याजममक रसायन है। प्रसाद भगवान् ्की कृपा है। प्रसाद सबकी औषधि है। प्रसाद र्जक्त का साकार रूप है। प्रसाद प्रकट रूप में देवमव है। प्रसाद र्जक्त का संचार करता, प्राण िाल देता है, स्फूर्त िप्रदान करता है और भजक्त अनुप्राखणत करता है।

प्रसाद सभी को उत्तम स्वास्थ्य, दीघायिु, र्ाजन्त और समृद्धि प्रदान करता है। प्रसाद की महहमा महान् ्है जो र्ाजन्त और आनन्द का दाता है। िन्य हैं प्रसाद के भगवान् ्जो अमरता और स्थायी आनन्द के दाता हैं।

हहन्दू ्रतीकों का दर्नि

पूजा करते ेसमय घजण्टयााँइसशलएबजायीजातीहैंजजससेबाह्यध्वर्नया ाँन सुनायी पड़ेंऔर मन अन्तमुखिी तथा एकाग्र हो सके।

देवता के सामनेजलायी जाने वाली ज्योर्त यह बताती है कक ईश्वर ज्योर्तस्वरूप है। वह प्रकार् ही है। भक्त कहता है—"हे भगवान!् आप ब्रह्माण्ड की स्व-प्रकाश्य ज्योर्त हैं। आप ही सूय,ि चन्द्र और अजग्न को प्रकाशर्त करतेहैं। मेरी बुद्धि को भी प्रकाशर्त करें।" यही ज्योर्त जलाने का महत्त्व है।

धूप देवता के सामने जलायी जाती है। इसका धुआाँसारे कमरे में फैल जाता है। यह एक रोगाणुमुक्त करने की कक्रया है। धूप जलाना इस बात का संकेंत करता है कक भगवान् सवव्यिापक हैं और सम्पूण ि ब्रह्माण्ड में उनकी उपजस्थर्त है। भक्त धूप जला कर ईश्वर से कहता है—"हे भगवान!् मुझमें छपी वासनाए ाँऔर संस्कार इस धूप के धुए ाँकी भार्ाँत जल कर राख हो जाय ेंऔर आप मुझेर्नदोष बना दें।"

कपूरि जलाना इस बात का द्योतक है कक व्यजक्त का अहंकार कपूरि की भार्ाँत वपघले ेऔर जीवाममा ज्योर्तयों की परम ज्योर्त के साथ एक हो जाये।

चन्दन का र्घसना भक्त को यह स्मरण कराता है कक उसे ेपरेर्ानयों में चन्दन की भार्ाँत धैयवान् होना चाहहए। जैसे ेचन्दन जब उसे पीसा जाता है, तो भी मिुर सुगन्ध विवककररत करता है, वैसे ही भक्त को कहठनाइया ाँ आनेपर बड़बड़ानेया दुःखी होनेके ववपरीत उसे ेचन्दन की भार्ाँत मिुरता और सज्जनता का ववककरण करना चाहहए। इससे एक और भी शर्क्षा शमलती है चन्दन को काटा या पीसा जाता है, तो भी वह र्ाजन्तपूवकि मिुर सुगजन्ध फैलाता है। उसी प्रकार ककसी को भी अपनेर्त्रु ुका भी बुरा नहींसोचना चाहहए।

शर्वशलंगं

आजकल एक प्रचशलत िारणा है ककशर्वशलंगं जननेजन्यि या प्रकृर्त की मुख्य जनन-र्जक्त का प्रतीक है। यह एक गम्भीर भूल ही नहीं, वरन् ्धचन्ताजनक भयंकर भूल है। पूव िवैहदक काल में भगवान् ्शर्व की उमपादन-र्जक्त का प्रतीक शलंगं बन गया था। शलंगं एक ववभेदक धचह्न है। र्नश्चय ही यह कामुक प्रतीक नहीं।ं आप शलंगंपुराण में पढ़ेंगे–

"प्रधानिंप्रकृर्त यियिश ंगंमुत्तमम्,्
गदधवर्रिसीनम् ्शब्-स्पशाहिवन्जतिम् ्॥"

आहद शलंगं सुगन्,ि वण,ि स्वाद, श्रवण, स्पर् िआहद से रहहत है। उसे ेप्रकृर्त कहा गया है।

शलंगं का अथ िसंस्कृत में धचह्न है। यह एक प्रतीक है जो एक अनुमान की ओर संकेत करता है। जब आप नदी में बाढ़ देखते हैं, तो आप अनुमान लगाते ेहैं कक अवश्य वपछले ेहदन तेज वषा िहुई होगी। जब आप िुआाँदेखते े हैं, तो अनुमान करते ेहैं कक अवश्य ही वहााँअजग्न होगी। अनधगनत रूपों से भरा यह बृहत् ्संसार सवर्िजक्तमान् ् भगवान् ्का शलंगं है। शर्वशलंगं भगवान् ्शर्व का प्रतीक है। जब आप शलंगं के दर्नि करतेहैं, तो आपका मन तमकाल ऊपर उठ जाता है। आप भगवान् ्के बारे में ववचार करनेलगतेहैं।

भगवान् ्शर्व वास्तव में र्नराकार हैं। उनका कोई रूप नहींहैं, कफर भी सभी उनके ही रूप हैं। सभी रूप भगवान् ्शर्व द्वारा व्यातत ककये हुए हैं। हर रूप भगवान् ्शर्व का रूप या शलंगं है।

शलंगं में मन की एकाग्रता को प्रेररत करने हेतु अमयन्त रहस्यमय र्जक्त है। जजस प्रकार एक स्फहटक के गोले को देखने ेसे मन र्ीघ्र एकाग्र हो जाता है, उसी प्रकार शर्वशलंगं को देखने ेपर भी मन र्ीघ्र केजन्ित हो जाता है। इसी कारण भारत के प्राचीन ऋवषयों और मनीवषयों ने भगवान् ्शर्व के मजन्दरों में शलंगं स्थावपत करने का र्निारण ककया।

शर्वशलंगं मौन की भाषा में स्पष्ट कहता है—"म ैंसदा एक हूाँ। म ैंर्नराकार हूाँ।" र्ुद्िऔर पववत्र आममाए ंाँ इस भाषा को समझ सकती हैं। एक अल्प बुद्धि या अल्प ज्ञानी ववदेर्ी जो कक लोलुप, कामुक व अर्ुद्िहै, व्यंग्यपूवकि कहेगा – "ये हहन्दू ूपुरुष की जननेजन्यि की पूजा करते ेहैं। ऐसे लोग अज्ञानी हैं और उनके पास कोई दर्नि नहीं ंहै।" जब कोई ववदेर्ी तशमल या अन्य कोई भारतीय भाषा सीखता है, तो वह सवप्रिथम कुछ अपर्ब्द ही सीखने का प्रयास करता है। यह उसके जजज्ञासु स्वभाव के कारण होता है। इसी तरह ये जजज्ञासु ववदेर्ी मूर्तपूिजा

में भी कुछ दोष ढूँढ़ने का प्रयास करते ेहैं। वास्तव में शलंगं र्नराकार सत्ता का बाह्य • प्रतीक मात्र है। भगवान् ्शर्व जो अववभाज्य, सवव्यािपक, अनन्त, मंगलमय, सदा पववत्र, मंगलकारी और इस ब्रह्माण्डके अमर तत्त्व हैं, वे आपके हृदय में ववराजजत अमर आममा हैं। वे आपके अन्तयार्मी अन्तराममा हैं और वे परब्रह्म के समरूप हैं।

स्फहटक शलंगं भी भगवान् ्शर्व का प्रतीक है। यह भी भगवान् ्शर्व की आरािना और पूजा हेतु प्रयुक्त होता है। यह स्फहटक सेबना होता है। इसका अपना कोई रंग नहींहोता; लेककन यह अपनेसम्पकि में आनेवाले पदार्थों के रंग को ग्रहण कर लेता है। यह र्नगुणि ब्रह्म अथवा र्नगुणि परमाममा या र्नराकार र्नगुणि शर्व का प्रर्तर्नधिमव करता है।

एक सच्चे भक्त के शलए शलंगं एक पमथर का टुकड़ा नहींहै। यह पूण िचैतन्य है। शलंगं उससे ेबातें करता और उसे ेअश्रु ुबहाने हेतु वववर् कर देता है। यह रोमांच उमपन्न करता है और हृदय को वपघला देता है। उसे ेर्रीर की चेतना से ऊपर उठा देता है और ईश्वर के साथ एक होनेमें तथा र्नववकिल्प समाधि प्रातत करने में उसकी सहायता करता है। भगवान् ्राम ने रामेश्वर में शर्वशलंगं की पूजा की। रावण महान् ्ववद्वान् ्था। उसने स्वणशिलंगं की आरािना की। शलंगं में ककतनी रहस्यमय र्जक्त है!

वह शलंगं जो नवीन सािकों के मन को एकाग्र करने हेतु अवलम्बन है तथा भगवान् ्शर्व का प्रतीक है, उसकी पूजा द्वारा आप सब र्नराकार शर्व को प्रातत करें!

आस्था और मूर्तपूजा

एक व्यजक्त था पूरण चन्द। उसके गुरु ने उसेनारायण-मन्त्र की दीक्षा दी और पूजा के शलए नारायण भगवान् ्की छोटी-सी मूर्त िदी। पूरण अपनी पूजा में बड़ा ही र्नयशमत था और वह मन्त्र-जप में भी कभी चूक नहीं ं करता था। लेकेकन काफी समय बाद भी उसे ेमूर्त िद्वारा आर्ीवादि देनेका कोई लक्षण नहींहदखायी हदया। इस

कारण वह अपने गुरु के पास इसका कारण पूछने के शलए गया। गुरुजी मुस्कराये और पूरण से बोले- 'अच्छा पुत्र, ऐसा करो, म ैंतुम्हें यह भगवान् ्शर्व की मूर्त िदेता हूाँ और शर्व-मन्त्र की दीक्षा देता हूाँ। तुम भगवान् ्शर्व की पूजा आस्था और भजक्त के साथ करना। शर्वजी को भोलानाथ भी कहते ेहैं और वे सरलता से प्रसन्न हो जाते ेहैं। वे रीघ्र ही तुम्हें आर्ीवादि देंगे।'

अगले ेछह माह तक पूरण चन्द भगवान् ्शर्व की 'पूजा और जप में लगा रहा। भगवान् ्नारायण की मूर्त ि पूजा के कमरे में िूल-भरी आल्मारी में पड़ी हुई थी। कई महीनों बाद पूरण अपनेगुरु के पास गया और उनसे े प्राथनिा की कक वे उसे ेउस देवता की मूर्त िऔर मन्त्र दें जो उसे ेवरदान दे।

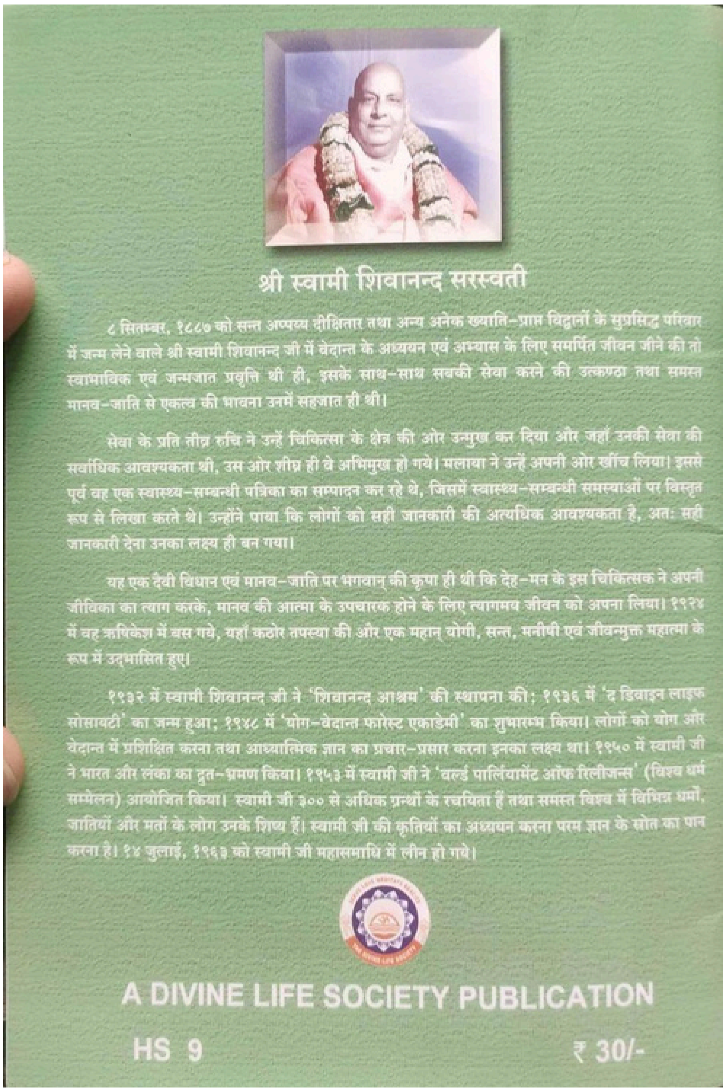
गुरुजी पुनः मुस्कराये। वे समझ गये कक अब उसे ेज्ञान देनेका समय आ गया है और उन्हें यह भी अनुभव हुआ कक शर्ष्य अनुभव सेसीखेगा। इस कारण वे बोले े– "मेरे अच्छे बच्चे, इस युग में मा ाँकाली प्रमयक्ष देवता हैं, उनकी इस मूर्त िकी पूजा करो। तुम्हें और उनके मन्त्र का जप करो। तुम्हें उनका आर्ीवादि अवश्य ही शमलेगा।" इस समय पूरण ने कोई भी प्रश्न नहींककया; उसेपूण िववश्वास था।

अब काली मा ाँकी पूजा प्रारम्भ हो गयी। शर्वजी को उठा कर नारायण भगवान् ्के पास आल्मारी में ऊपर रख हदया गया। पूरण मा ाँकाली की प्रर्तमा के सामनेिूप जलाने लगा जजसका िुआाँ उठ कर ऊपर आल्मारी में रखी दोनों मूर्तयों के पास जाने लगा। यह देख कर पूरण क्रोधित हो उठा कक मा ाँकाली के शलए जलायी िूप को सूघाँने का भगवान् ्शर्व को क्या अधिकार है ? क्योंकक जब वह इनकी पूजा करता था, तो वे प्रसन्न नहींहुए और वह उनकी पूजा करते-करते नराश हो गया था। आज तो उसनेमा ाँकाली के शलए िूप जलायी है। और उसनेगुस्से में आ कर भगवान् ्शर्व की मूर्त िउठा ली और उसकी नाक में रूई िाल कर उसे ेबन्द करने लगा, ताकक वे िूप को न सूघाँ सकें। परन्तु उसी समय मूर्त िअदृश्य हो गयी और भोलेनाथ मुस्कराते हुए उसके सामनेखड़े ेथे। पूरण को बड़ा आश्चय िहुआ। वह उनके चरणों में धगर पड़ा। प्रभुपूरण से वरदान मागाँने के शलए कह रहे थे— "वमस, म ैं तुमसे प्रसन्न हूाँ, वर मागाँ।"

पूरण बोला- "प्रभु! जब म ैंआपकी लगन पूजा और मन्त्र जप करता था, तब आप मुझे ेवरदान देने नहीं ं आये; लेककन जब मनैंआपकी पूजा छोड़ दी, तो आप मेरे सामनेक्यों प्रकट हुए? यह मेरी समझ में नहींआ रहा है। इसका क्या रहस्य है? मुझे कृपा कर बताय।ें"

भगवान् ्बोले- "मेरे बच्चे, इसमें रंचमात्र भी रहस्य नहींहै। बात शसफि इतनी है कक जब तुम मुझे मात्र एक मूर्त िमानते ेथे ेऔर अपने मन की लहर के हहसाब से मुझे ेजब चाहे तब फेंक सकते थे, तो म ैंतुम्हारे सामनेभला कैसे ेप्रकट होता । परन्तु आज तुमने मेरे साथ सजीव मूर्त िकी भाति व्यवहार ककया और तुम मेरी नाक को रूई से बन्द करने लगे, जजससे कक म ैंतुम्हारे सामनेआनेसे स्वयंको न रोक सका।"

भावावेर् में पूरण चन्द कुछ न कह सका और एक बार पुनः भगवान् ्को प्रणाम करने लगा और प्रभु के प्रेम में लीन हो गया। उसने प्रभुसे कोई बड़ा वरदान नहीं मागाँ। प्रभु के प्रेम में ही उसने सब-कुछ पा शलया।



श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

८ सितम्बर, १८८७ को सन्त अप्पय्य दीक्षितार तथा अन्य अनेक ख्याति-प्राप्त विद्वानों के सुप्रसिद्ध परिवार में जन्म लेने वाले श्री स्वामी शिवानन्द जी में वेदान्त के अध्ययन एवं अभ्यास के लिए समर्पित जीवन जीने की तो स्वाभाविक एवं जन्मजात प्रवृत्ति थी ही, इसके साथ-साथ सबकी सेवा करने की उत्कण्ठा तथा समस्त मानव-जाति से एकत्व की भावना उनमें सहजात ही थी।

सेवा के प्रति तीव्र रुचि ने उन्हें चिकित्सा के क्षेत्र की ओर उन्मुख कर दिया और जहाँ उनकी सेवा की सर्वाधिक आवश्यकता थी, उस ओर शीघ्र ही वे अभिमुख हो गये। मलाया ने उन्हें अपनी ओर खींच लिया। इससे पूर्व वह एक स्वास्थ्य-सम्बन्धी पत्रिका का सम्पादन कर रहे थे, जिसमें स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्याओं पर विस्तृत रूप से लिखा करते थे। उन्होंने पाया कि लोगों को सही जानकारी की अत्यधिक आवश्यकता है, अतः सही जानकारी देना उनका लक्ष्य ही बन गया।

यह एक दैवी विधान एवं मानव-जाति पर भगवान् की कृपा ही थी कि देह-मन के इस चिकित्सक ने अपनी जीविका का त्याग करके, मानव की आत्मा के उपचारक होने के लिए त्यागमय जीवन को अपना लिया। १९२४ में वह ऋषिकेश में बस गये, यहाँ कठोर तपस्या की और एक महान् योगी, सन्त, मनीषी एवं जीवन्मुक्त महात्मा के रूप में उद्भासित हुए।

१९३२ में स्वामी शिवानन्द जी ने 'शिवानन्द आश्रम' की स्थापना की; १९३६ में 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' का जन्म हुआ; १९४८ में 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी' का शुभारम्भ किया। लोगों को योग और वेदान्त में प्रशिक्षित करना तथा आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना इनका लक्ष्य था। १९५० में स्वामी जी ने भारत और लंका का द्रुत-भ्रमण किया। १९५३ में स्वामी जी ने 'वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑफ रिलीजन्स' (विश्व धर्म सम्मेलन) आयोजित किया। स्वामी जी ३०० से अधिक ग्रन्थों के रचयिता हैं तथा समस्त विश्व में विभिन्न धर्मों, जातियों और मतों के लोग उनके शिष्य हैं। स्वामी जी की कृतियों का अध्ययन करना परम ज्ञान के स्रोत का पान करना है। १४ जुलाई, १९६३ को स्वामी जी महासमाधि में लीन हो गये।

A DIVINE LIFE SOCIETY PUBLICATION

HS 9 ₹ 30/-